मधु कांकरिया के कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी समाज

आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी
ईमेल – ayesharayani@gmail.com
मोबाईल - 7620745145

सारांश:

आज इक्कीसवी सदी में आदिवासी विमर्श साहित्य के लिए चिंतन का विषय बना हुआ हैI पुरातन काल से ही आदिवासी समुदाय को एक पिछड़ा समाज मानकर समाज से अलग-थलग रखा गया, उन्हे हमेशा से गौण माना गया, अपमानित किया गया, समाज के विकास एवं प्रगति में उन्हें बाधा माना गया लेकिन आज शिक्षा के प्रसार प्रचार एवं आदिवासियों के लिए लिखा गया साहित्य पढ़कर आदिवासी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहे हैंI आदिवासियों को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कदम-कदम पर संघर्ष करना पड़ा हैI अनेक साहित्यकारों ने आज आदिवासी समाज को अपने लेखन में जगह दी हैI आदिवासी विविध समुदाय, उनके रहन-सहन,रीति-रिवाज,पर्व-त्योहार,संस्कृति को आज साहित्य के माध्यम से दर्शाया जा रहा हैIआज आदिवासी साहित्य विविध विधाओं के माध्यम से मुखरित हो रहा हैI वर्षों से आदिवासी समाज को 'जंगली' की संज्ञा देकर उनसे जनवरों जैसा बर्ताव किया गयाI समाज की मुख्यधारा से उन्हे दूर रखा गयाI 'मूर्ख' कह कर उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई गई लेकिन आज आदिवासी साहित्य आदिवासियों को जागृत कर रहा हैI अपने अधिकारों के प्रति सजग कर रहा है और उनमे विद्रोह की आग भड़का रहा हैI आदिवासी साहित्य ने न केवल आदिवासियों के आत्मविश्वास को जगाया है साथ ही उन्हें समाज की मुख्यधारा से भी जोड़ दिया हैI

बीजशब्द- आदिवासी, प्रकृति, संस्कृति, समाज, जंगल, आदि

प्रस्तावना

जो जनजातियां आदिम है और प्राचीन काल से जंगल को ही अपना घर समझकर जंगल में वास करती आ रही है, ऐसी जनजातियों को 'आदिवासी' शब्द से संबोधित किया गया हैI यह युगों-युगों से जंगल की रक्षा करते आ रहे हैंI इस रूप में यह प्रकृति के वारिस भी कहे जा सकते हैंI फिर भी आज उनका अपना अस्तित्व और पहचान नहीं हैI समाज की मुख्यधारा ने इन्हें 'जंगली' कहकर अपने से अलग कर दिया हैI आदिवासी समाज आज भी सब सुख सुविधाओं से दूर जंगलों में,पहाड़ों में अपना जीवन यापन कर रहा हैI आज वह शिक्षा के अभाव में नाना प्रकार के शोषण का शिकार हैI

स्वतंत्रता के पहले से लेकर आज तक आदिवासियों की वही समस्याएं बनी हुई हैं-विकास एवं उन्नति के नाम पर जंगल की कटाई, आदिवासियों का जंगलों से खदेड़ा जाना, जमीदारों द्वारा शोषण,पुलिस प्रशासन द्वारा शोषण, अज्ञान, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी इन समस्याओं से हर आदिवासी ग्रस्त है इन समस्याओं से संघर्ष करते-करते वह दम तोड़ देता है लेकिन समस्याएं यथावत हैंI

वर्तमान में देश के विकास के नाम पर आदिवासियों से उनके जल-जमीन-जंगल छीनकर उन्हें बेदखल किया जा रहा हैI इतना ही नहीं प्रकृति को भी हानी पहुंचाई जा रही हैI इस स्थिति में 'विस्थापन' यह उनकी मुख्य समस्या बन गई हैI आदिवासी रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ निकल पड़े हैंI आदिवासियों के लिए प्रकृति उनके प्राणों से भी अधिक प्रिय हैI प्रकृति के अपमान को वह अपना अपमान समझते हैंI आदिवासियों की जीवन शैली प्रकृति पर ही टिकी हुई हैI प्रकृति के बिना आदिवासी अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते लेकिन ऐसे प्रकृति रक्षक, प्रकृति प्रेमी आदिवासी समुदाय को हमारा समाज हेय दृष्टि से देखता रहा हैI आदिवासी समाज हर तरह के बनावटीपन, चमक-दमक से दूर साधारण-सा जीवन जीता हैI ऐसे में साहित्यकारों का कर्तव्य बनता है कि वह दूसरे समुदायों की तरह आदिवासी समुदाय को भी अपने साहित्य में न्याय देंI उनके जीवन की सही पड़ताल करेंI आदिवासी समाज का स्वरूप प्रकृति की तरह ही स्वच्छ एवं पारदर्शक हैI आदिवासी प्रकृति प्रेमी, प्रकृति रक्षक, प्रकृति के पूजक होते हैंI इनके देवता भी चंद्र, सूर्य, पहाड़,पेड़ होते हैंI आदिवासी समाज नारी को भी उतना ही महत्व देता है जितना पुरुष कोI आदिवासी धार्मिक कर्मकांडो में विश्वास रखते हैं लेकिन यह पूरी तरह से अंधविश्वासू नहीं होतेI संघर्ष करते हुए जीवन जीते हैं लेकिन जीवन का आदर करते हैंI अभाव में भी सुख ढूंढते हैंI लेकिन यह भी सत्य है कि आदिवासी समाज आर्थिक विपिन्नता से जूझ रहा है अज्ञान,अशिक्षा,गरीबी,बेरोजगारी इनके जीवन के अभिशाप बने हुए हैंI इस अभिशाप से आदिवासियों को मुक्त करना ही साहित्य का उद्देश्य हैI

मधु कांकरिया के कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी समाज

मधु कांकरिया वर्तमान काल की सशक्त साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैI वह एक निर्भिक एवं बेबाक लेखिका के रूप में जानी जाती हैI उन्हें समाज में जहां भी अन्याय,असमानता,विसंगति दिखाई दी, उन्होंने अत्यंत साहस के साथ उसे अभिव्यक्त कियाI उन्होंने अपना साहित्यिक सफर 'खुले गगन के लाल सितारे' से शुरू किया जो कि नक्सलवाद एवं आदिवासी जीवन पर आधारित उपन्यास थाI इसमें उन्होंने आदिवासी समाज, उनके रहन-सहन, खान-पान,आचार-विचार,संस्कृति,पर्व-त्योहार,प्रकृति प्रेम,उनकी जीवनशैली आदि को पाठकों के सामने रखा हैI साथ ही उन्होंने आदिवासियों की उन समस्याओं को उठाया है, जिससे आज का आदिवासी समाज पीड़ित हैI आदिवासियों की आर्थिक स्थिति आज जर्जर हैI आदिवासियों की अर्थव्यवस्था जंगलों पर टिकी हुई थी, लेकिन आज जंगलों की कटाई तेजी से हो रही हैI और जो आदिवासी जंगल के मालिक थे,आज मजदूर बने हुए हैंI विकास के नाम पर जंगलों की कटाई तो हो रही है लेकिन प्रश्न यह है कि विकास किसका हो रहा है? देश का या आदिवासियो का ? या फिर कुछ चुनिंदा लोगों का? समय-समय पर सरकार के द्वारा अनेक योजनाएं चलाई गई लेकिन वह भी आदिवासियों की जान की कीमत परI जिससे आदिवासी बदहाली, गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, बेरोजगारी के शिकार बनते गएI आर्थिक स्थिति के साथ ही आदिवासियों की शिक्षा स्थिति भी बदतर हैI आदिवासियों की शिक्षा आदिवासी भाषा में ही होनी चाहिए इसकी तरफ किसी का ध्यान ही नहीं गयाI आदिवासी समाज अनेकानेक वर्षों से जंगलों तथा पहाड़ों में अपना जीवन यापन करता आया है, इसलिए उन्हें शिक्षा मार्ग पर लाना अधिक कठिन है लेकिन यदि यह शिक्षा उन्हीं की भाषा में हो तो यह कार्य सरल हो जाएगाI आदिवासी अस्मिता पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए मधु कांकरिया लिखती हैं- "आदिवासियों को जंगल, नदी और पहाड़ों से घिरे उनके प्राकृतिक और पारंपरिक परिवेश से बेदखल किया जा रहा है अभी तक वह अपने विश्वासो,रीति-रिवाजों,लोक-नृत्यो और लोक-गीतों के साथ मवेशियों, नदियों, तालाबों और जड़ी-बूटियों से संपन्न एक जनसमाज में रहता आया हैI इसकी एक विशिष्ट संस्कृति रही हैI उसका अपना विकसित अर्थ तंत्र थाI वह अपने पुश्तैनी पारंपारिक और कृषि आधारित कुटीर धंधों से परंपरागत था I बढईगिरी, लोहारगिरी, मधुपालन, दोना पत्तल, मधु उत्पादन, रस्सी, चटाई बुनाई जैसे काम उसे विरासत में मिले थे परंतु आज खुले बाजार की अर्थव्यवस्था ने सदियों से चले आ रहे हैं उनके पुश्तैनी और पारंपरिक धंधों को चौपट कर दिया हैI`"**1** आदिवासियों के प्रति पहले जो गवार,असभ्य की धारणा बनी हुई थी इस धारणा के प्रति विद्रोह साहित्यकारों ने अपने साहित्य में व्यक्त किया हैI आज साहित्यकार कहानी,उपन्यास,नाटक,व्यंग्य,कविता आदि विधाओं के माध्यम से आदिवासियों को केंद्र में रखकर लेखन कार्य कर रहे हैंI अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने आदिवासियों के घर,रीति-रिवाज, संस्कृति, पर्व-त्योहार आदि पर प्रकाश डाला हैI इस संदर्भ में 'करमा' जो कि आदिवासियों का त्यौहार होता है इस दिन आदिवासी लोकगीत गाते हैं-

"करम करम कर लेंगे समारोह,
करम का दिना कैसे आबी,
सावन भादो दिनो भली मेल,
कुंवारे करम गडाएI"**2**

आधुनिक काल में आदिवासी,नारी,दलित,किसान,अल्पसंख्याक जैसे अनेक विमर्श उभर कर सामने आए हैंI जिनके माध्यम से उन सारे प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की जा रही है जिनसे यह वर्ग जूझ रहे हैंI आदिवासी जीवन की गंभीर समस्या है- पानीI "पानी के एक घड़े के लिए हर दिन करीब तीन-चार किलोमीटर की यात्राI सूखे के दिनों में पांच-छह किलोमीटर चलना पड़ता हैI"**3** तमाम सुख-सुविधाओं से वंचित इस समाज को साहित्यकारों ने वाणी दी हैI आदिवासी साहित्य में आदिवासी संस्कृति के साथ आदिवासियों का शोषण और वास्तविक चित्रण मिलता हैI इस संदर्भ में मधु जी के 'हम यहां थे' मे एक आदिवासी का कथन है- "क्या करें हम? हमारा ही घड़ा और हम ही प्यासेI क्या नहीं देते हम लोहा,अल्मुनियम , जड़ी-बूटी, धान, कपास, बॉक्साइट, साग-सब्जी और इसके बदले क्या लेते हैं हम? बस जरा सा खाद्यान्न, थोड़े बर्तन, थोड़े से कपड़े बसI किसी भी प्रकार के प्रदूषण में हमारा हाथ नहीं लेकिन आज हमें क्या मिल रहा है पुरखों की जमीन से बेदखली, गरीबी, भुखमरी, बेबसी और बीमारियांI"**4** आज आदिवासियों को उनके अधिकारों के प्रति जागृत करने में आदिवासी तथा गैर आदिवासी साहित्यकार बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैंI आदिवासी संस्कृति, अस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षा यह साहित्यकारों का मुख्य उद्देश्य बन गया हैI

आदिवासी साहित्य वही साहित्यकार लिख सकता है जिसने स्वयं आदिवासी जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव किया हो, उनकी पीडाओं को जाना हो I उनके जीवन से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया हो I और जब ऐसा साहित्य लिखा जाता है वह आदिवासी जीवन में बदलाव के लिए कटिबद्ध होता हैI आज गैरआदिवासी समाज भी आदिवासियों का आधार बन कर सामने आया हैI इस संदर्भ में प्रो. व्यंकटेश आजाम का कथन है-" जो आदिवासी जीवन से प्रेरणा लेकर लिखा हुआ है वह आदिवासी साहित्य हैI"**5**

आदिवासियों को प्रकृति से असीम लगाव होता हैI वह धरती को अपनी मां मानते हैंI इस संदर्भ में एक आदिवासी का कथन है "हल चलाने से पहले हम धरती से माफी मांगते हैं कि उसका सीना चीर रहे हैंI पर कुछ आदिम जनजातियां तो खेती तक नहीं करती कि हल चलाने से धरती मां का सीना चाक हो जाएगाI"**6**

इक्कीस्वी सदी में साहित्य में आदिवासी विमर्श केंद्र में हैI साहित्यकारों में दो वर्ग हैI आदिवासी और गैरआदिवासीI आदिवासी साहित्यकारों का साहित्य स्वानुभूति के कारण वास्तविक लागता है जबकि गैरआदिवासीयों का साहित्य अनुभव के अभाव के कारण कच्चा एवं वाचिक लागता है लेकिन दोनों ही वर्गों का उद्देश्य समान है आदिवासी संस्कृति एवं सभ्यता के धरोहर की रक्षा करनाI

आदिवासियो के जीवन को समझने के लिए आदिवासी साहित्य सहायक हैI आदिवासी जीवन किसी भी प्रकार के नियमों, बंधनों से मुक्त हैI आदिवासी साहित्य आदिवासियों के वास्तविक स्थिति एवं उनके संघर्ष को दिखाता हैI आदिवासी साहित्य मे आदिवासी जीवन की मान्यताएं,लोक-कथाएं, लोक-विश्वास,अंधविश्वास,प्रकृति प्रेम, सामूहिकता की भावना, संस्कृति, गीत- संगीत,आदिवासी-स्वतंत्रता, आदिवासी समस्याए एवं प्राणियों से लगाव यह बुनियादी तत्व समाहित है और इन तत्वों को समाहित करने वाला साहित्य आदिवासी साहित्य कहा जा सकता हैI

निष्कर्ष

आदिवासी साहित्य का मूल स्वर विद्रोह का रहा है लेकिन इसके साथ ही आदिवासियों की वेदना, संवेदना, आकांक्षा एवं समस्याओं को साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता हैI आदिवासी साहित्य का परिणाम यह हो रहा है कि आज आदिवासी अपने अधिकारों के प्रति, शिक्षा के प्रति जागृत हो रहे हैंI अपने ऊपर हो रहे शोषण का विद्रोह करने लगे हैंI आदिवासी साहित्य के कारण आदिवासियों के प्रति नया दृष्टिकोण निर्माण हो रहा हैI अब पहले की तरह उन्हें भोला, मूर्ख, जंगली ना मानकर एक विकासोन्मुख जनजाति के रूप में देखा जा रहा हैI आदिवासी साहित्य आदिवासी अनेक समस्याएं जैसे आर्थिक समस्या, शिक्षा, शोषण, विस्थापन, आरोग्य को उठाता हैI आदिवासी समाज अनेक वर्षों से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता आ रहा है लेकिन इस लड़ाई को वाणी साहित्यकारों ने दी है आज आदिवासी साहित्यकारों में राम दयाल मुंडा, सुशीला सामंत, वाल्टर भेंगरा, महादेव टोप्पो , सुषमा असुर, निर्मल सिंह, निर्मला पुतुल, रमणिका गुप्ता, सुशीला सामंत ,दुलारचंद मुंडा, हरिराम मीणा, शंकर लाल मीणा, दयामणि बरला, सुषमा असुर, लक्ष्मण गायकवाड़ आदि नाम शीर्षस्थ हैI

आदिवासी विमर्श आदिवासी अस्तित्व की रक्षा का पक्षधर हैI आदिवासी समुदाय जो समाज के मुख्यधारा से दूर चला गया हैI उसे समाज से जोड़ना यह आदिवासी साहित्य का प्रयत्न रहा हैI आदिवासी समुदाय भारतीय संस्कृति का परिचायक हैं फिर भी आज उन्हें अपने अस्तित्व एवं अधिकारों की रक्षा के लिए सरकार से संघर्ष करना पड़ रहा है और यही कारण है आदिवासी विमर्श का उदय विद्रोह की इस प्रतिक्रिया के रूप में हुआ हैI आदिवासी सभ्यता कि रक्षा एवं विकास के लिए उन्हें शिक्षित करना, उनके अंधविश्वास एवं जडता को दूर करने की आवश्यकता हैI और यह प्रयत्न साहित्यकार अपने साहित्य द्वारा कर रहे हैंI

आज राष्ट्र निर्माण के नाम पर जो आदिवासियों को उनके जल-जंगल- जमीन से खदेड़ा जा रहा है, सरकार के द्वारा उसे रोका जा सकता हैI आदिवासियों के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है और यह प्रयत्न सरकार द्वारा किए जाने चाहिएI आदिवासी साहित्य आदिवासियों को सम्मान से जीने का,खुद की लड़ाई खुद लड़ने का,खुद की पहचान बनाने का, शोषण का विरोध करने का, सामूहिक शक्ति बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें विकास के मार्ग पर अग्रसर होने का संदेश देता हैI

संदर्भ

1. उषा कीर्ति रावत, सतीश पांडे, शीतला प्रसाद दुबे-आदिवासी केंद्रित हिंदी साहित्य, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012,पृ -17
2. मधु कांकरिया- हम यहां थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2020, पृ-158
3. मधु कांकरिया- हम यहां थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2020, पृ 156
4. मधु कांकरिया -हम यहां थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2020 पृ- 161
5. खन्ना प्रसाद- अमीन: आदिवासी साहित्य, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 पृ- 24
6. मधु कांकरिया-हम यहां थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2020 पृ - 157